गैरिक मृदभाण्ड

(Ochre Coloured Pottery)

M.A. IVth Sem.
Paper- Ancient Indian Potteries (E.C.)

Navin Kumar
Professor
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology
Patna University

1949 ई0 में B.B. Lal ने ताम्रनिधियों की समस्या के संबंध में उत्तर प्रदेश के बदायूँ जिले में स्थित बिसौली और बिजनौर जिले के राजपुर–परसू नामक गॉव के पास स्थित इन पुरास्थलों पर उत्खनन कराया था जहॉ से इसके पहले खेतों की जुताई करते समय 'ताम्रनिधियों' के उपकरण प्राप्त हुए थे। इन उपर्युक्त दोनों स्थानों पर लाल को ताम्र–उपकरण तो नहीं प्राप्त हुए थे लेकिन गैरिक (गेरूआ) रंग के मिट्टी के बर्तन के कुछ ठीकरे (Sherds) अवश्य मिले थे। लाल ने इस प्रकार के पात्र खण्डों को गैरिक मृदभाण्ड नाम उसके रंग के आधार पर प्रदान किया। इस प्रकार के मृदभाण्डों को O.C. P. कहा जाता है। प्रारंभ में ये गेरू मृदभाण्ड इतने छोटे टुकड़े में उपलब्ध हुए कि इनका प्रकार ज्ञात करना कठिन था। परन्तु इतना तो पता लग गया कि ये पात्र चाक पर बनाए जाते थे और जिस मिट्टी का प्रयोग किया गया वह मध्यम श्रेणी का था। पकाने के पूर्व बर्तनों पर गेरू रंग का घोल चढ़ाया जाता था। चूकिं ये पूरी तरह नहीं पक पाए। अतः इनका रंग नारंगी लोहित से गहरा लाल हो गया। यह मृदभाण्ड हाथ लगने से ही रंग छोड़ने लगता है।

इस मृदभाण्ड परम्परा का साक्ष्य अनेक स्थलों पर मिला है जिसमें विशेषकर उल्लेखनीय है हस्तिनापुर और अतिरंजीखेड़ा। इन दोनों उत्खनित पुरास्थलों के प्रथम कालखंड से ये मृदभाण्ड प्राप्त हुए है। इस मृदभाण्ड संस्कृति का प्रसार पंजाब के जालंधर जिले में स्थित कठपलाव से लेकर पूर्वी राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित नोह, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिला शाहजहॉपुर में स्थित बहरैया तक के विस्तृत क्षेत्र में होने के साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं। इस क्षेत्र के लगभग 100 स्थलों से यह मृदभाण्ड पाया गया है जिनमें मेरठ जिले में स्थित हस्तिनापुर, बरेली जिले में स्थित अहिच्छत्र, जिला सहारनपुर में स्थित बडगॉव, बहादराबाद में अम्बाखेरी, एटा जिला में स्थित अतिरंजीखेड़ा, इटावा जिला में स्थित सैफई, जिला बुलन्द शहर में स्थित लालकिला, जिला बदायूँ में स्थित बरौली, जिला बिजनौर में स्थित राजपुर परशु एवं नरसिंहपुर् राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित नोह् और जयपुर में स्थित जोधपुरा इत्यादि उत्खनित पुरास्थल उल्लेखनीय है।

चित्रण तथा उत्कीर्ण डिजाइन– प्रारंभ में गैरिक मृदभाण्ड के पात्र खण्डों में चित्रकारी तथा उत्कीर्ण रेखांकन दोनों का अभाव था लेकिन अब इस स्थिति में काफी परिवर्तन हो चुका है। अतिरंजीखेड़ा और लाल किला के से प्राप्त गेरू मृदभाण्ड से संबंधित सामग्री महत्वपूर्ण है। इन दोनों स्थलों से चित्रित तथा उत्कीर्ण मृदभाण्ड पाए गए। सर्वप्रथम अतिरंजीखेड़ा में कुछ चित्रित मृदभाण्ड मिले परन्तु लाल किला में इनकी बहुलता पाई गई। इन स्थानों के गेरू मृदभाण्डों के आकारों में बड़े आकार के बड़े-बड़े मटके या घड़े, कलश, कटोरे, ठक्कन और संभवतः सआधार तस्तरी या थाली का उल्लेख किया जा सकता हैं।

अतिरंजीखेड़ा और लालकिला से (बुलन्दशहर) प्राप्त गैरिक पात्र खण्डों की लाल सतह पर काले रंग के चित्रण मिलते हैं। जैसे घड़ों (Veses) में गले के उपर एक चौड़ी काली पट्टी। कभी कभी अन्य बर्तनों के उपरी या निचली बाहरी भाग में गहरी काली पट्टी (Thick Band), सामानान्तर पट्टियो (Parallel Band), के अन्दर आड़ी जाली के चौखाने (Checkered pattern) मिलते है। लालकिला से प्राप्त एक पात्र खण्ड पर बना हुआ कुकुदमान वृषभ (Humped Bull) भी उल्लेखनीय है।

उत्कीर्ण अलंकरण (Incised decoration): अतिरंजीखेड़ा, लालकिला और पंजाब के **कठपलाव** से प्राप्त गैरिक पात्र खण्डों में मिले हैं। प्रमुख उत्कीर्ण अलंकरणों में लहरदार रेखाएँ, पत्ती के आकार अथवा अंग्रेजी अक्षर V के आकार के अलंकरण (Leaf or V shaped Pattern), चौखाने (Check), टेढी मेढ़ी रेखाएँ (Zigzag lines), सामानान्तरण रेखाएँ (Parallel lines) विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

गैरिक मृदभाण्ड के निर्माता : गैरिक मृदभाण्ड के निर्माताओं के विषय में अधिक मतभेद है जो विद्वान O.C. P. का संबंध ताम्रनिधियों (Copper Hoards)से जोड़ते हैं वे इन्हें गंगा घाटी के मूल निवासियों की कृति मानते हैं। अन्य विद्वान इस मृदभाण्ड का संबंध परवर्ती हड़प्पा या सैंधव (Late Harappan) संस्कृति के लोगों से बतलाते हैं। कुछ विद्वान का मत है कि ये मृदभाण्ड किसी एक खास संस्कृति के उपादान न होकर गैरिक एवं लाल मृदभाण्ड प्रयोग करने वाली अनेक संस्कृतियों के द्योतक है।

प्रसिद्व पुरातत्ववेता बी0 बी0 लाल ने सर्वप्रथम ताम्रनिधियों और गैरिक मृदभाण्डों की समकालीनता की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया था।

इस समस्या पर विचार करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

पात्र प्रकार– हस्तिनापुर के उत्खनन की रिपोर्ट में लाल ने प्रमाण के अभाव में गैरिक मृदभाण्ड के बर्तनों के आकार प्रकार (Pottery types) के संबंध में कोई निश्चित मत नहीं प्रकट किया था लेकिन अब स्थिति काफी बदल चुकी है। बहादराबाद बड़गॉव, लालकिला (बुलन्दशहर) अतिरंजीखेडा, तथा सैफई आदि के उत्खननो से प्राप्त पात्र खंडो के आधार पर पात्र प्रकारों (Shapes) के संदर्भ में कुछ जानकारी प्राप्त की गई है। बर्तनों का गढन सर्वत्र (सभी स्थल) एक जैसा नहीं है। पतले (Thin) एवं मोटे (Thick) दोनो ही प्रकार के बर्तन प्राप्त होते हैं। गैरिक मृदभाण्ड के बर्तनों के विषय में आम धारणा यह है कि ये बर्तन भली भांति एवं ठीक से पके हुए नहीं हैं। अंगुलियों के रगड़ने मात्र से ही चूर चूर होने लगते हैं। लेकिन इस मत से प्रसिद्व पुरातत्वविद् H.D. Sankalia सहमत नहीं हैं। उनका मत है कि गैरिक बर्तन कोई मृदभाण्ड परम्परा (Ceramic Industry) नहीं है अपितु कुछ खास किस्म की परिस्थितियों का परिणाम है। संकालिया का मत है कि O.C. P. पुरास्थलों के लम्बे समय तक पानी में डूबे रहने के कारण (Water Logging) यह स्थिति हो गई है। यही कारण है कि इस प्रकार के बर्तन अत्यन्त नाजुक (Fragile) एवं भंगूर (Brittle) हो गए हैं। ये छूने मात्र से ही धूल में परिवर्तित होने लगते है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के पुराविद डा0 बी0बी0 लाल सांकलिया के उपर्युक्त मत से सहमत नहीं है। उन्होंने O.C.P. के अनेक पुरास्थलों से प्राप्त पात्र खण्डों के सूक्ष्म परीक्षण तथा विश्लेषण के बाद यह मत प्रकट किया है।

1. गैरिक मृदभाण्ड (O.C.P) कम पके (ill fired) नहीं है। इस बर्तन का लाल रंग इस बात का परिचायक है कि ये बर्तन काफी तापक्रम में पकाए गए हैं।
2. गैरिक मृदभाण्डों से संबंधित पुरास्थलों के काफी लम्बे समय तक पानी में डुबे रहने की संभावना बहुत कम प्रतीत होती है। क्योंकि (O.C.P) के साथ प्राप्त होने वाले अन्य पात्र खण्डों पर बाढ़ का प्रमाण बिल्कुल नहीं दिखाई पड़ता है।
3. बी0 बी0 लाल का मत है कि O.C.P के पात्र खण्डों पर क्षरण (weathering) का जो प्रभाव परिलक्षित होता है उसका प्रमुख कारण यह है कि उस प्रकार के पात्र खण्ड बहुत दिनों तक खुले हुए पड़े रहे तथा जाड़ा, गर्मी एवं बरसात के ऋतु परिवर्तन के शिकार हुए।

इन दोनों मतों के विद्वानों ने गैरिक मृदभाण्ड काल में उपरी गंगा घाटी तथा समीपवर्ती पश्चिमी क्षेत्रों के लिए दो प्रकार की जलवायु की परिकल्पना की है। प्रथम मत के अनुसार इस काल में बहुत अधिक जल वृष्टि हुई होगी तभी तो इन क्षेत्रों में जल मग्न होने की नौबत पैदा हुई होगी। द्वितीय मत शरद जलवायु की परिकल्पना करता है। इनमें से किसी भी मत के स्वीकार्य होने के लिए नए प्रमाण जुटाने और इस प्रकार की पुरातात्वविक साक्ष्यो से परिक्षण तथा विश्लेषण की आवश्यकता है।

कालानुक्रम या तिथिक्रम– दोआब के गांगेय क्षेत्र में कृष्ण लोहित (Black & Red) तथा चित्रित धूसर मृदभाण्डों के पूर्व गैरिक मृदभाण्ड प्रचलित थे। अधिकांश पुरस्थलो, जिसका उत्खनन किया गया है वे केवल एकांकी संस्कृति वाले पुरास्थल (Single culture sites) है। ऐसी स्थिति में इनके आधार पर स्तरीकरण की सहायता से तिथिक्रम हेतु बहुत सरल

काम नहीं है। परन्तु हस्तिनापुर के उत्खनन से इस प्रकार के पात्रों के सबसे नीचले स्तरों से प्राप्त होने के कारण बी0 बी0 लाल (उत्खाता) ने इसका समय 1200 ई0 पूर्व के पहले अनुमानित किया है। नोह, अतिरंजीखेडा एवं अहिच्छत्र तथा श्रृंगवेरपुर की खुदाईयों से भी इस प्रकार के पात्र खण्ड सबसे निचले स्तर से प्राप्त किए हैं। गैरिक मृदभाण्डों का कालक्रम लगभग अनुमानतः इस प्रकार के पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर तेरहवीं-बारहवी शताब्दी ई0 पूर्व के लगभग निर्धारित किया जा सकता है।

गेरूवर्णी मृदभाण्ड की संस्कृति की तिथि उष्मादीप्ति विधि के आधार पर 2600 ई0 पूर्व से 1100 ई0 पूर्व के मध्य निर्धारित की गई है। गेरूवर्णी मृदभाण्ड संस्कृति की जोधपुरा से प्राप्त तिथि 2500 ई0 पूर्व से 2300 ई0 पूर्व के बीच निर्धारित हुई है।

कृषि एवं पशुपालन– अतिरंजीखेड़ा के गैरिक मृदभाण्ड वाले स्तरों से धान, जौ तथा दालों से कार्बनीकृत दाने प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार उपरी गंगा घाटी में यह साक्ष्य कृषि कार्य का प्राचीतनम प्रमाण है। इसके अतिरिक्त सिलबट्टे भी प्राप्त हुए हैं जो अनाज के दानों को पीसने के सूचक हैं। बड़े-बड़े मटके और घड़े भी संभवतः अनाज भंडारण के लिए उपयोग में आते रहे होंगे।

सैफई तथा लालकिला के उत्खननों से पशुओं की कुछ हड्डियॉ प्राप्त हुई है। सैफई से प्राप्त हड्डियों से बैल की पसलियॉ उल्लेखनीय है। लालकिला से प्राप्त पशुओं की हड्डियों में से अधिकांश या तो अधजली है अथवा उनमें हलाल करने के निशान है। लाल किला से प्राप्त एक पात्र खण्ड पर ककुदमान वृषभ का चित्र भी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है।

पशुओं में संभवतः गाय, बैल पालतू पशुओं के रूप में अस्तित्व में आ चुके थे।

मकान– गैरिक मृदभाण्ड के किसी भी पुरास्थल से मकान की रूपरेखा नहीं मिली है। लालकिला से मिट्टी के कुछ लोदों पर नरकुल की छाप मिली है जिनसे यह संकेत मिलता है कि मकानों का निर्माण बास-बल्ली एवं घास फूँस की सहायता से किया जाता था। लालकिला से एक मकान की फर्श का साक्ष्य मिला है। यह फर्श मिट्टी के बर्तनों के टुकड़ों से कूट कर बनाया गया था तथा उपर से मिट्टी के प्लास्टर (Plaster) से चिकना किया गया था।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गैरिक मृदभाण्ड परम्परा उपरी गंगा धाटी में ग्राम्य जीवन का सबसे पहला उदाहरण प्रस्तुत करती है। किन्तु अधिकांश पुरास्थल एकांकी संस्कृति वाले हैं। पुरास्थलों पर सांस्कृतिक जमाव का स्तर बहुत मोटा नहीं मिलता है। पुरास्थल भी एक दूसरे से पर्याप्त दूरी पर स्थित है। इससे यह संकेत मिलता है कि उस समय मानव की आबादी अत्यन्त विरल थी। लम्बे समय तक एक ही स्थान पर इस संस्कृति के लोग लगतार नहीं निवास करते थे बल्कि अपनी बस्तियॉ बदलते रहते थे। गैरिक मृदभाण्ड परम्परा के विभिन्न पक्षों के विषय में पुरातात्विक जानकारी नितान्त आवश्यक है। आशा की जाती है कि पुराविद् इसके विभिन्न पक्षों से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए निकट भविष्य में अपेक्षित पुरातात्विक साक्ष्य जुटाने में सफल हो सकेंगे।